Postal Regd. MP/BHOPAL/244/21-23 *'ANASUYA' RNI-Regd. No. 45134/86*

पृष्ठ संख्या-12/प्रति अंक मूल्य - 4/-रु.
वार्षिक चन्दा 100/- रु. मात्र
आजीवन सदस्यता शुल्क : 700/-
प्रकाशन तिथि/पोस्टिंग तिथि : 16 अप्रैल 2021

मुझे याद है...!

आप सभी का अभिनंदन...

इस प्रसंग पर बोलते हुए मुझे बहुत खुशी महसूस हो रही है क्योंकि मेरा कई वर्षों का अनुभव कहता है कि, जब महिलाएँ एक साथ रहकर काम करती हैं, संगठित होती हैं, तब वे अपने जीवन में परिवर्तन लाती हैं। अब विश्व स्तर पर और कुछ देशों में समानांतर रूप से बहुत कुछ हो रहा है तब कामगारों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर संगठित होना होगा और आपने यह करके दिखाया है जिसकी मैं सराहना करती हूँ।

मेरी कार्ययात्रा लंबी रही है। मुझे असंगठित क्षेत्र की महिलाओं की भूमिका और महत्त्व का अहसास आज से 50 वर्ष पूर्व हुआ था, जब मैं अहमदाबाद के टेक्सटाइल उद्योग के साथ जुड़े मजूर महाजन संघ की महिला शाखा की आगेवान थी। उसके बाद 1972 में असंगठित क्षेत्र में कार्यरत बहनों, खासतौर से बिक्रीकर्ता बहनों और सिर पर बोझा ढोने वाले कामगारों को संगठित करने वाले महिला स्वाश्रयी संघ 'सेवा' का जन्म हुआ। उसके बाद घर में बैठकर काम करने वाली कामगार बहनें मेरे पास आईं। ये बहनें नग के हिसाब से रजाई के खोल सीलने का काम करती थीं। जब हमने श्रम विभाग में संपर्क किया तो हमें स्पष्ट कहा गया कि,'ये बहनें तो गृहिणियाँ हैं, ये कामगार नहीं हैं...' उनके मालिकों ने भी कुछ ऐसा ही कहा... 'ये सब तो गृहिणियाँ हैं, इन्हें तो केवल अपने शौक पूरे करने के लिये थोड़े से पैसों की जरूरत है...' दूसरे एक शाहपुर इलाके की सिलाई काम करने वाली बहनें भी हमारे पास आईं और हमें यह पता चला कि उन्हें भी कामगार के तौर पर नहीं गिना जाता। हम उनको देखकर समझ गये थे कि ये बहनें अपने परिवार को

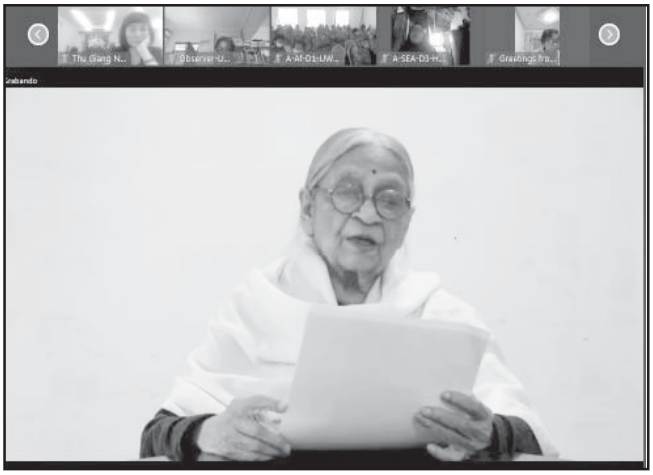

अनसूया

आद्य-संपादक : ज्योत्स्ना मिलन
संपादक : प्रीति शान्त

वर्ष : 36 अंक :12 अप्रैल 2021

रोज़गार के विकल्प पर केंद्रित

भीतर

6. होमनेट इंटरनेशनल : काँग्रेस की प्रथम ...
7. प्रशिक्षण से मिला विकल्प ...
8. सेवा अतिथि गृह बना बहनों की जीविका ...
10. केंचुआ खाद से मिला रोज़गार ...

आर्थिक मदद करने के लिये दिन के आठ घंटे काम करती हैं और काम के बहुत कम पैसे मिलने की वजह से वे गरीब ही बनी रही हैं। हमारा पहला महत्त्वपूर्ण काम था कि उनकी कामगार के रूप में पहचान बने और हमने उन्हें 'घरखाता कामगार' के तौर पर पहचान दी। मुझे गर्व है कि जो शब्द हमने चालीस वर्ष पहले उपयोग में लाना शुरू किया था उसका आज भी उपयोग किया जा रहा है।

हमने घरखाता कामगारों को संगठित करना शुरू किया, जो बहुत कठिन था क्योंकि ये बहनें घर से बाहर कदम नहीं रखती थीं। उनमें से कई तो अपने-आपको कामगार के तौर पर गिनती भी नहीं थीं। लेकिन हम उनके काम का ज्यादा पैसा उन्हें दिलवाने में सफल रहे और फिर उनकी सहकारी समिति की स्थापना में मदद की।

मजूर महाजन संघ के साथ जुड़े होने के कारण मैं एक अंतर्राष्ट्रीय लेबर फेडरेशन की महिला शाखा में भी सक्रिय थी। उन्होंने आई.एल.ओ. के साथ एक मीटिंग आयोजित की, इस मीटिंग में महिला कामगारों के प्रति सभी की बहुत दिलचस्पी थी। उसमें कृष्णा पटेल और रौनक जहान जैसी बहनों ने इस विषय के लिये खास समूह बनाया। यहीं पर मैंने घरखाता कामगारों के साथ के अपने अनुभवों की प्रस्तुति की जिसके चलते उनकी हमारे साथ प्रोजेक्ट करने में दिलचस्पी जागी। हमने तीन राज्यों में घरखाता कामगारों को संगठित करके इस प्रोजेक्ट को शुरू किया। भारत में एन्ड्रिया सिंघ इस प्रोजेक्ट को संभाल रहे थे। उन्होंने इस प्रोजेक्ट में संलग्न चुनौतियों को बहुत अच्छी तरह से समझकर हमारी मदद की। यह प्रोजेक्ट बहुत सफल रहा और बाद में साउथ-ईस्ट एशिया में आई.एल.ओ. द्वारा इस प्रोजेक्ट को विस्तार दिया गया। इस प्रोजेक्ट की फलश्रुति के रूप में 'होमनेट : साउथ ईस्ट एशिया' नामक नेटवर्क का जन्म हुआ। आई.एल.ओ. की मैगजिन 'वर्ल्ड ऑफ वर्क' में घरखाता कामगारों के प्रोजेक्ट पर आधारित संशोधनों का समावेश किया गया।

आई.एल.ओ. व 'सेवा' के साथ के प्रोजेक्ट में एक हिस्से में कानूनी मामलों को शामिल करना था जिसमें भारत के मुंबई की विद्वान वकील इंदिरा जयसिंह भी जुड़ी हुई थीं। उन्होंने सलाह दी कि हकीकत में तो घरखाता कामगारों के लिये एक अलग मजदूर कानून की जरूरत है। उनकी मदद से हमने भारत के घरखाता कामगारों के लिये एक नये कानून का मसौदा बनाया। 1982 के साल में सांसद के तौर पर मेरी नियुक्ति हुई और मैंने संसद में एक निजी विधेयक के रूप में हमारे द्वारा तैयार किये गये मसौदे को रखा। जिस पर बहुत चर्चा हुई लेकिन वह संसद में पारित ना हो सका। जैसा कि हमेशा होता है उन संसद सदस्यों ने भारत में घरखाता कामगारों के काम, उनकी गरीबी, दु:ख और असहायता को अपने घरों और अपने क्षेत्रों में अपनी नज़र से देखा तो होगा पर वे उसे समझ नहीं पाए। लेकिन इतना संतोष था कि उनमें से कईयों में इस बारे में अधिक जानने और सीखने की दिलचस्पी जागी।

इस दौरान अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन आई.सी.एफ.टी.यु. ने मुझे वक्तव्य देने के लिये बुलाया। जहाँ मैंने असंगठित क्षेत्र के कामगारों और घरखाता कामगार बहनों के बारे में खासतौर पर बात की। यहाँ मुझे मिश्रित प्रतिक्रिया मिली। कुछ लोग मुझ पर बहुत नाराज हुए, उन्होंने कहा कि असंगठित क्षेत्र के कामगार, युनियनों के द्वारा अब तक प्राप्त सफलताओं को नुकसान पहुँचायेंगे। एक व्यक्ति ने कहा कि, 'मालिक फैक्ट्रियों से काम लेते हैं और बाद में घर बैठी बहनों को कम पैसा देकर काम करवाते हैं। हमें इन घरखाता कामगारों पर पूर्णरूप से प्रतिबंध लगाना चाहिये।' लेकिन कुछ अन्य मेरे समर्थन में थे और मानते थे कि ट्रेड यूनियनों को असंगठित क्षेत्र के कामगारों को संगठित करने का काम करना चाहिये। खासतौर पर यह बात अधिकतर के मन में कहीं तो थी कि दुनिया में लाखों स्त्रियाँ घरखाता कामगार के रूप में काम करती हैं इससे आई.सी.एफ.टी.यु. की बहनों लगा कि इनको संगठित करना ही चाहिये। लेकिन इस चर्चा का कोई निष्कर्ष नहीं निकला...

लेकिन दूसरी तरफ घरखाता कामगारों को संगठित

करना चाहिये ऐसा लगने पर अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन के अभियान में सुदृढ़ता आई। 1985 के साल में 'सेवा' आई.यु.एफ. अंतर्राष्ट्रीय यूनियन की सदस्य बनी। उसके जनरल सेक्रेटरी 'डेन गालीन' प्रगतिशील विचारों के थे और इसीलिये अधिसंख्य कामगारों का समर्थन करने और उन्हें संगठित करने में हमारी बहुत मदद हुई।

उन्होंने कहा कि, आई.यु.एफ. घरखाता कामगारों के प्रश्नों को आवाज़ देकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन देगा और उनके लिये वे आई.सी.एफ.टी.यु. की जनरल कांग्रेस में इससे संबंधित प्रस्ताव पारित करने का सुझाव देंगे। हमने घरखाता कामगारों से संबंधित प्रस्ताव तैयार किया। पूरी दुनिया में उन्हें संगठित करने के लिये यूनियनों का समर्थन पाने के लिए, उनके साथ काम किया तथा आई.एल.ओ. से इस विषय पर कन्वेंशन की मांग की। मैंने यूरोप की कुछ यूनियनों के साथ जुड़े हुए मित्रों को प्रस्ताव को समर्थन देने का अनुरोध किया और डेन के जर्मन युनियन डी.जी. बी. ने इस प्रस्ताव को आई.सी.एफ.टी.यु. में पेश करने को कहा। मुझे भी आई.सी.एफ.टी.यु. में आमंत्रित किया गया, लेकिन मैं उनकी डेलीगेट के तौर पर भाग नहीं ले सकी क्योंकि उस समय 'सेवा' आई.सी.एफ.टी.यु. की सदस्य नहीं थी। फिर भी मैं प्रस्ताव के समर्थन में बोल पाई और 'सेवा' के घरखाता कामगारों के साथ के अनुभवों को समझा पाई।

इस सारी बात में मैं जोड़ना चाहूँगी कि इस पूरी प्रक्रिया में भारत के ट्रेड यूनियनों की कोई खास सहायता नहीं मिली थी। उन्होंने हमारी उपेक्षा ही की। क्या उन्होंने असंगठित क्षेत्र के मजदूरों को संगठित नहीं किया... ? या शायद उन्हें यह पसंद न आया हो कि इसमें महिला कामगार आगे आ रही थीं। लेकिन अब आज 25 वर्ष के बाद भारत के अधिकतर युनियन असंगठित क्षेत्र के कामगारों को संगठित कर रहे हैं और हमारे साथ चल रहे हैं... ! इसकी हमें प्रसन्नता है।

आई.सी.एफ.टी.यु. की जनरल कांग्रेस में मुझे पता चला कि विश्व के अन्य भागों में भी घरखाता कामगारों को संगठित करने का काम कुछ लोग कर रहे हैं। मुझे ख्याल तो था कि थाईलैण्ड और फिलीपींस में ल्युसी लाझो यह काम कर रही हैं लेकिन – जेन टाटे इंग्लैंण्ड में और उसी तरह से एनिक ऑस्ट्रेलिया के युनियन के साथ रहकर घरखाता कामगारों, जिनमें अधिकतर कढ़ाई करने वाले थे, को संगठित करने का काम करते थे – इस बारे में पता चला। लेटिन अमेरिका में ब्राजिल की युनियन के साथ भी घरखाता कामगार जुड़े थे। एनिक एक डच बहन थीं जिन्होंने हमें एक मीटिंग में एक साथ लाने का काम किया हमें एक-दूसरे से मिलने का अनोखा उत्साह था और हमने साथ मिलकर, आई.एल.ओ. घरखाता कामगारों पर एक कन्वेंशन पारित करे, इस दिशा में साथ काम करना शुरू किया।

मैं यह स्पष्ट कह रही हूँ कि ट्रेड युनियन की बहनों ने हम पर जो विश्वास किया उसके प्रभाव से तथा आई.एल.ओ. के भीतर बहनों के सहकार से अंततः आई.एल.ओ. ने घरखाता कामगारों पर चर्चा करना तय किया। ऐसा पहली बार हुआ था कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर असंगठित क्षेत्र के कामगारों को स्वीकार किया गया, इतने ऊँचे स्तर पर वास्तव में चर्चा की गई थी। असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिये यह एक सफलता थी। जिससे इसके बाद आई.एल.ओ. ने असंगठित क्षेत्र के कामगारों पर कई चर्चाएँ और घरेलू कामगारों पर कन्वेंशन पारित किया। लेकिन इस सबमें हमे पहल करने वाला माना जाता है।

मुझे 1995 और 1996 में आई.एल.ओ. द्वारा होने वाली चर्चाओं की तैयारी के लिए विशेषज्ञों के समूहों में आमंत्रित किया गया। जिसमें हमने मुख्य प्रश्नों को एक संरचना में व्यवस्थित किया। मैं उन्हें एक बात समझा नहीं सकी जो था 'स्वरोज़गार' 'सेल्फ इप्लायमेंट' ... आपको पता है कि घरखाता कामगार स्वरोज़गार करते हैं, ये किसी मालिक के लिये या किसी कॉन्ट्रेक्टर के लिये नग के हिसाब से काम करने वाले भी हो सकते हैं। परंतु युनियनों को स्वरोज़गार कामगारों का काम करना था। उन्हें केवल

समर्थन मिला

मालिकों के लिये काम करने वाले कामगारों का काम करना था। इसलिए उन्होंने घरखाता कामगार शब्द को स्वीकार नहीं किया जिसमें दोनों प्रकार के कामगारों का समावेश होता था। उन्होंने 'घरेलू कामगार' शब्द पर बहुत जोर दिया जिसमें केवल मालिक के लिये काम करने वाले कामगारों का ही समावेश होता था। इस वजह से आई.एल.ओ. का कन्वेन्शन 'घरेलू कामगारों' के लिये ही बना। 'होम बेस्ड वर्कर्स' यह कानूनी रूप से अधिकृत शब्द बन गया।

अब बात करते हैं इंटरनेशनल लेबर कॉन्फ्रेंस की। इसमें तीन प्रकार के प्रतिनिधि होते हैं... युनियनों और मालिकों के प्रतिनिधि जिनमें से हरेक को वोट डालने का अधिकार होता है। सभी को एक समूह में वोट डालना होता है। घरखाता कामगारों के विषय पर कमेटी में चर्चा इन सबकी उपस्थिति में हुई। कामगारों के समूह के नेता लेके वांडेन बर्ग एक डच ट्रेड युनियन एफ.एन.वी. में से थे। कामगारों के बारे में सही समझ लेने उन्होंने केटेलीन और एनी को एफ.एन.वी. की तरफ से 'सेवा' में भेजा। उन्होंने कई दिनों तक कामगारों के क्षेत्रों में जाकर, मिलकर, उनके सवालों को समझने की कोशिश की।

'सेवा' आई.एल.सी. में डेलीगेट के तौर पर भाग लेने की अधिकारी तो नहीं थी लेकिन आई.सी.एफ.टी.यु.ने हमें अपनी टीम का हिस्सेदार बनाया, जिसमें 'निरीक्षक' के तौर पर हम उसमें जा सके। मुझे 'निरीक्षक' के तौर पर जाना अच्छा तो नहीं लगा था। युनियन से जुड़े होने के बावजूद हम यूनियन के अधिकारी थे और हम ही मूल आयोजक थे और हमें ही एजेण्डा पर हो रही चर्चा में कामगारों का प्रतिनिधित्व करने से क्यों दरकिनार कर दिया गया...? परंतु लेके ने आग्रह किया कि हमें इस चर्चा में भाग लेना ही चाहिये तभी हम अपनी बात को अच्छी तरह से कामगारों के समूह में प्रस्तुत कर सकते हैं। कुछ युनियनों को यह अच्छा नहीं लगा और उन्होंने हमें बाहर करवाने का प्रयास किया। अभी भी असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिये अधिकतर उन सभी में बहुत अरूची थी।

उस समय आई.सी.एफ.टी.यु. के प्रतिनिधि युवा श्री गाय रायडर थे, जो हमारे पक्के समर्थक थे और आज वे आई.एल.ओ. के डायरेक्टर जनरल हैं, इसका 'सेवा' को बहुत गर्व है।

आई.एल.सी. में हुई चर्चाएँ बेहद नाटकीय और तनावपूर्ण रहीं। उस समय पूरी दुनिया में मालिक संगठित क्षेत्र के कामगारों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के जरिये असंगठित क्षेत्र की ओर धकेल रहे थे। वे असंगठित क्षेत्र के लिए कोई प्रावधान नहीं चाहते थे और इसे रोकने की कोशिश करते थे। सरकारें भी इस मुद्दे पर विभाजित हो गई थीं। कुछ असंगठित क्षेत्र के कामगारों का समर्थन करना चाहते थे, जबकि दूसरे कई मालिकों की ओर थे। उस समय नवसृजित साउथ अफ्रीका हमारी तरफ था, यह मुझे बराबर याद है। 1995 में हुई पहली चर्चा में इस विषय पर कन्वेंशन करना है या नहीं इस पर समिति को वोट देना था। मजदूर समूहों ने 'हाँ' में वोट दिया, जबकि मालिकों के समूह ने 'ना' में अपना वोट दिया और अंत में बहुत कम बहुमत से सरकार ने 'हाँ' में वोट दिया। मुझे याद है कि मालिकों का समूह बहुत गुस्से में था, उनमें से ज्यादातर चर्चा में से बाहर चले गये थे।

अगला कदम पूरी अंतर्राष्ट्रीय लेबर कान्फ्रेंस द्वारा कन्वेंशन के लिये वोट देना था। मालिकों ने अपनी सरकार पर दवाब बनाने के लिये कई राजनीतिक प्रयत्न किये और वे कई देशों में सफल भी रहे। हम भी अलग-अलग देशों में प्रचार करने में व्यस्त थे। घरेलू काम पर 177 वें आई.एल.ओ. कन्वेंशन को कानूनी बल मिला है, यह जानना जरूरी है। कन्वेंशन 1996 के अंत में पारित हो गया... हुर्रे! असंगठित क्षेत्र की कामगार बहनों के लिये यह बड़ी जीत थी। दुर्भाग्य से कुछ ही देशों ने इसकी पुष्टि की क्योंकि अधिकतर देशों में मालिकों ने इस कन्वेंशन के विरूद्ध खूब प्रचार किया।

अब चलो, हम यहीं से आगे अपने भविष्य के बारे में विचार करते हैं। इस प्रथम कामगार बहनों की अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस का ध्येय आप जहाँ रहते हैं वही आपका घर यानी

सुखद परिणाम

पृथ्वी पर ईमानदारी से अर्थपूर्ण कार्यों द्वारा शांति प्रस्थापित करनी है।

हमारी महिला कामगारों का उद्देश्य किसी की नौकरी, संपत्ति या प्राकृतिक संसाधनों को लेने के बाद ऐसी तकनीकी या संरचना खड़ी करना नहीं है जो बहनों और कामगारों की अपनी जिन्दगी के लिए घातक हो।

श्रम का गौरव यह गाँधी जी की विचारधारा का एक मूलभूत स्तंभ है जो प्रत्येक काम को समान रूप से आंकता है और ऐसा रोज़गार जिससे मन और शरीर दोनों को पोषण मिलता है, उसे महत्त्व देना, आज के समय में हमारे लिये बहुत महत्त्वपूर्ण है। आत्मनिर्भरता की बात तो अपनी 'सेवा' में सब जानते हैं इसमें खासतौर पर हमारी जरूरत के मुताबिक पूर्ति होनी चाहिये और उत्पादन व आपूर्ति में संतुलन रहे तो प्रत्येक उत्पाद स्थानीय स्तर पर छोटे पैमाने पर ही कर सकता है। इसके अलावा गाँधी जी के ट्रस्टीशिप के विचार के संबंध में बात करें तो ये केवल आर्थिक संदर्भ से ही नहीं बल्कि हमारे श्रम के लिये भी है, जिसमें हमें जरूरत के मुताबिक सहयोग देना चाहिये। बाकी तो आने वाली पीढ़ी के लिए मानव सृजित संपत्ति हो या धरती द्वारा दी गई बख्शिशरूपी संपत्ति सभी के हम रखवाले मात्र हैं।

मुझे विश्वास है कि हमारी बहनें और कामगार, युवा से लेकर वयस्क तक सब अपनी कांग्रेस की इस अंतर्राष्ट्रीय पहल को अगले सौ सालों तक आगे ले जायेंगे। 1917 में एक टी.एल.ए. (टेक्सटाईल लेबर एसोसिएशन अहमदाबाद) के रूप में शुरू हुआ और 1972 में 'सेवा' में परिणत हुआ वो 'सेवा' आज अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ रही है और 50 वें वर्ष की ओर कदम बढ़ा रही है रेनाना, ... सच में? आप भी इसकी साक्षी हैं।

हमें दोनों तरफ से बदलाव की जरूरत है, घर जहाँ हम रहते हैं और काम करते हैं तथा काम जो हम शहरों में, फैक्ट्रियों में और खेतों में करते हैं।

सस्ती मजदूरी जैसा कुछ नहीं, यह हमें याद रखना चाहिये, निरंतर खुद से कहना चाहिये तथा इसे महसूस किया जाना चाहिये। काम के सच्चे मूल्य का भुगतान एक या दूसरी तरह से खेत, फैक्ट्री या घर में होता ही है। अगर मेहनताना ना मिले तो अंततः उसका परिणाम सामाजिक अशांति, बाल मृत्यु, निरक्षरता, गरीबी, असहायता और उसके बाद राजकीय उहापोह, सांस्कृतिक पतन, पर्यावरण की अधोगति और विपदाओं के रूप में हमें मिलता ही है। संक्षेप में, समाज में कल्याण केवल उचित वेतन और श्रमिकों की सुरक्षा से आ सकता है। साधन भी हमारे लक्ष्य जितने ही महत्त्वपूर्ण हैं। यह करने के लिये हमें अपने अर्थतंत्र को बदलने की जरूरत है। हमारा अपना अर्थतंत्र ... ऐसा नहीं कि जिसमें निरंतर संघर्ष के साथ हम अलग-अलग दायरों के लिए मनन करें .....संक्षेप में, विश्व भर के सजीव समाज का पोषण होता रहे, ऐसे अर्थतंत्र की जरूरत है, जहाँ मनुष्य के हाथ, मस्तिष्क और हृदय को अपने घर और काम में पोषण मिले। हमें ऐसे अर्थतंत्र की जरूरत है, जहाँ बहनों का नेतृत्व और पहचान मिले, परस्पर सहकार, विश्वास और सम्मान मिले। हमें ऐसे अर्थतंत्र की जरूरत है जो वैविध्यपूर्ण, स्थानीय, टिकाऊ, अधिकतर भाग घर आधारित और लोगों की जरूरत व कुदरत के बीच संतुलन बनाने वाला हो और हमारा ये अंतर्राष्ट्रीय प्रयास अब इस दिशा में आगे बढ़ेगा। अपनी बहनों द्वारा आज स्थापित यह कांग्रेस कामगारों की दुनिया बदलने के ध्येय के साथ आगे बढ़ेगी।

आप सबका खूब आभार ... रेनाना आप और आपकी टीम असंगठित उद्योगों और समाज में क्रांति लायेगी और आप जिनके साथ काम करते हैं वे लाखों परिवार खिल उठेंगे। अंत में हम अपना नारा बुलंद करते हैं... 'हम सब एक हैं!' ईश्वर आपकी एकता को बल दे ...

आप सभी बहनों को मेरा प्रेम पूर्वक धन्यवाद!

(होमनेट इंटरनेशनल की कांग्रेस के लांच के समय इलाबेन द्वारा दिया गया वक्तव्य, 23 फरवरी 2021)

होमनेट इंटरनेशनल : कांग्रेस की प्रथम सभा

होमनेट इंटरनेशनल कांग्रेस की स्थापना ता. 23-24 फरवरी, 2021 को इसकी वर्चुअल फाउंडिंग कांग्रेस से हुई। यह घरखाता कामगारों और असंगठित क्षेत्र के कामगारों के लिये एक ऐतिहासिक क्षण, दिन था। कम्प्यूटर की स्क्रीन पर एक के बाद एक चेहरे दिखते गये... जिनमें से कई जाने-पहचाने थे ... साथ में किये हुये काम की पुरानी यादें मन में उतर आईं और साथ में खुशी भी थी कि 'सेवा' द्वारा घरखाता कामगारों के लिये रखी गई नींव आज एक अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस का रूप ले रही है। अफ्रीका के केन्या, तंजानिया, युगांडा आदि देशों के एसोसिएशन, कम्युनिटी बेस्ड संस्थाएँ, बचत समूह या हस्तकला कारीगर, मोती काम करने वाले, डलिया बुनने वाले, कॉफी उत्पादन से जुड़े, बुनकर, लकड़ी पर नक्काशी करने वाले कामगार, लेटिन अमेरिका के ब्राजिल, चिली, निकारागुआ, पेरू आदि देशों के संगठन और उनके एसोसिएशन के कपड़े सीलने वाले, हस्तकला कारीगर, धातु, ऊन का काम करने वाले, खाना बनाने वाले, साउथ एशिया के बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, पाकिस्तान, श्रीलंका के संगठन, सहकारी मंडलियाँ, प्रोड्यूसर कंपनियाँ जो कपड़ा उद्योग के साथ जुड़ी हैं, चटाई बनाने वाले, कांच उद्योग से जुड़े हुए, बुनकर, पैकेजिंग, हस्तकला कारीगर, खाना बनाने वाले कामगार, साउथ ईस्ट एशिया के कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, फिलीपिंस, थाईलैण्ड, वियतनाम के कपड़ा उद्योग से जुड़े, चमड़े का काम करने वाले, बाँस क्राफ्ट वाले, टोकरी बुनने वाली श्रमिक बहनें, सदस्य आधारित संस्थाएँ होमनेट इंटरनेशनल कांग्रेस के सदस्य बने हैं। अफ्रीका, लेटिन अमेरिका, साउथ एशिया, साउथ ईस्ट एशिया जैसे कई दूर- दराज तक .... लेकिन आज सब एक प्लेटफॉर्म पर इकट्ठा हुए थे।

इस दो दिवसीय फाउंडिंग कांग्रेस में घरखाता कामगारों के अभियान को आगे ले जाने के लिये लंबे समय से कार्यरत मार्टी बहन, प्रो. मार्था चेन जो हावर्ड युनिवर्सिटी में पढ़ाती हैं और 'विगो' (WEIGO) की एक स्थापक सदस्य, चांदनीबहन जोशी जो घरखाता कामगारों के अभियान की 'सेवा' साथी हैं और होमनेट साउथ एशिया के ऐन्फोर्सर आदि ने घरखाता कामगारों के सफर की बात की- 'सेवा' की रेनानाबहन जिनका होमनेट इंटरनेशनल को खड़ा करने में बड़ा अहम योगदान रहा है। उन्होंने और होमनेट थाईलैण्ड की रकाविन बहन ने अब तक के इतिहास और उसके साथ होमनेट इंटरनेशनल की सुसंगतता की बात की। उसके बाद, होमनेट इंटरनेशनल का संविधान प्रस्तुत किया गया, उस पर चर्चा हुई। तत्पश्चात होमनेट इंटरनेशनल की संस्थाओं तथा युनियनों की वर्किंग कमेटी की रचना के लिये होमनेट इंटरनेशनल की को-ऑर्डिनेटर के रूप में जान्हवी बहन का सर्वसम्मति से चुनाव हुआ। ऐफिलियेशन फीस तय की गई। उसके बाद होमनेट इंटरनेशनल की प्राथमिकताओं और कार्यक्रमों की प्रस्तुति की गई, होमनेट इंटरनेशनल के लोग तय हो गये और आखिरकार... प्रत्येक खंड के एफिलियेट्स ने गीत गाकर वर्चुअल कांग्रेस का समापन किया।

-मनाली

+ दुनिया में 260 मिलीयन कामगार घरखाता कामगार महिलाओं की कुल सदस्य हैं।

+ दुनिया के कुल घरखाता कामगारों के दो तिहाई यानि 65 प्रतिशत घरखाता कामगार एशिया पेसिफिक में हैं।

+ दुनिया के 56 प्रतिशत घरखाता कामगार ग्रामीण और 44 प्रतिशत घरखाता कामगार शहरी हैं और अधिकतर गैर कृषि काम में हैं।

+ दुनिया के अधिकतर घरखाता कामगार 'सर्विस सेक्टर' में हैं।

+ दुनिया के विकासशील देशों के एक तिहाई घरखाता कामगार और एक चौथाई पुरूषों के पास स्कूली शिक्षा नहीं है।

('विगो' की स्टेटेस्टीकल ब्रीफ नंबर 27 से साभार)

प्रशिक्षण से मिला विकल्प

भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा असंगठित क्षेत्र से आता है और कोरोना काल में सबसे ज्यादा कृषि क्षेत्र की महिला किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ा। एक तरफ खेती की लागत बढ़ गई और दूसरी तरफ उत्पाद का मूल्य कम हो गया। इसके अलावा, इन महिला किसानों को प्राकृतिक आपदा की मार भी झेलनी पड़ती है। इन सभी परेशानियों के बावजूद महिला किसानों ने जिस हौसले का परिचय दिया, वह हौसला मानो हिमालय की चट्टान से भी बड़ा था। यही हौसला दिखाते हुआ हताश और निराश होने की बजाय उन सभी ने परिस्थितियों से लड़ने का फैसला किया और अब उनके इस संघर्ष ने अपनी दिशा पकड़ ली है।

कुछ महीने पहले की बात है, भागलपुर की कई महिला किसानों के समूहों के द्वारा यह मुद्दा उठाया गया कि, खेती में लागत को कैसे कम किया जाए। इस मुद्दे को लेकर 'सेवा' के क्षेत्रीय कार्यकर्ताओं के साथ कई दौर की बातचीत के बाद सामूहिक रूप से एक कार्य योजना बनाई गई।

इस कार्य योजना में मुख्य रूप से दो विषयों पर जोर दिया गया–

1. खेती की नई पद्धति की सम्पूर्ण जानकारी
2. जैविक विधि से कीट एवं रोग का नियंत्रण

उपयुक्त विषय पर ट्रेनिंग की शुरुआत करने हेतु 'सेवा' संस्था के द्वारा कृषि विशेषज्ञ को अपना योगदान सुनिश्चित

करने हेतु कार्य योजना का प्रारूप तैयार करने को कहा गया। कुछ ही दिनों में कार्य योजना पर विस्तृत चर्चा एवं मार्ग दर्शन के लिए बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में 'सेवा' दिल्ली से नित्या बहन, अदिति बहन और सेवा फेडरेशन गुजरात के साथ सम्मिलित चर्चा कर ट्रेनिंग का मॉडल तैयार किया गया। मॉडल के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी कृषि वैज्ञानिक सुबोध कुमार मिश्रा को दी गई तथा प्रशिक्षण का दिशा– निर्देश व देख–रेख का सम्पूर्ण कार्य अदिति शाह, कार्यक्रम समन्वयक, दिल्ली के द्वारा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू हुए महज दो माह ही हुए हैं। इसके अंतर्गत अभी तक कुल 270 महिला प्रगतिशील किसानों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। प्रशिक्षण का लाभ ले चुकी बहनें प्रशिक्षण में बताए गए जैविक कीटनाशक अपने घर पर बनाकर इस्तेमाल करने लगीं हैं जिसके कारण रासायनिक कीटनाशक का प्रयोग कम हो गया।

नई पद्धति के अंतर्गत किसानों को उन्नत बीज की प्रजाति की जानकारी, लगाने का तरीका तथा सिंचाई तकनीकी की जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रथम चरण में ही महिला किसानों को इसकी सफलता का आभास होने लगा। उनकी खेती में कीट एवं रोग नियंत्रण पर होने वाले खर्च में कमी दिखने लगी है, रासायनिक कीट नाशक का एक विकल्प उन्हें मिल गया है। ये महिला किसान बताती हैं कि दूसरे

चरण के पूर्ण होने पर एक ठोस विकल्प उनके पास होगा।

कुन्ती देवी, ग्राम हरवा, ब्लॉक जगदीशपुर, जिला भागलपुर, बिहार की रहने वाली हैं। खेती उनका मुख्य पेशा है। खेती से हुई आमदनी से वे अपने घर-परिवार का भरण-पोषण करती हैं। लेकिन उनकी आमदनी का एक बड़ा हिस्सा फसलों में लगने वाले रोग-बीमारी एवं उनकी देखभाल पर खर्च हो जाता था। छोटी-मोटी किसी भी बीमारी एवं कीटों के नियंत्रण के लिए बाजार की दवाओं पर ही निर्भर रहना पड़ता था। एक तरफ कृषि में उपयोग होने वाली दवाओं के आसमान छूते दाम और दूसरी तरफ रासायनिक दवाओं के अत्यधिक प्रयोग से मिट्टी की उर्वरक क्षमता घटती जा रही थी। उत्पादन खर्च के अनुरूप नहीं हो पाता था, इसके कारण अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

इन परेशानियों का जिक्र जब उन्होंने अपने ग्रुप में किया तो ग्रुप की सभी बहनों ने कहा कि इस तरह की परेशानी तो हम लोग भी झेल रहे हैं। इन सभी बहनों ने तय किया कि इस समस्या की चर्चा 'सेवा' भारत की क्षेत्रीय कार्यकर्ता पूनम कुमारी एवं संगीता कुमारी से करेंगे।

चर्चा के बाद फरवरी माह के प्रथम सप्ताह में जैविक कीट नियंत्रण विषय पर ट्रेनिंग देने का निर्णय लिया गया। ट्रेनिंग में शामिल कुन्ती देवी को इस बात की जानकारी हुई कि गोमूत्र आधारित जैविक कीट नाशक का उपयोग किसी भी फसल पर किया जा सकता है। गोमूत्र आधारित जैविक कीट नाशक का छिड़काव फसलों पर करने से फसलों की तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति होती है जैसे बीमारी से बचाव, कीटों से बचाव एवं खुराक की पूर्ति। किसी भी चार पैर वाले जानवर के मूत्र का उपयोग किया जा सकता है। गोमूत्र में 95 प्रतिशत जल, 2.5 प्रतिशत यूरिया एवं 2.5 प्रतिशत खनिज एवं मिनरल पाए जाते हैं जो कि पौधों के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। कुन्ती देवी बताती हैं कि इस प्रशिक्षण से हमें बहुत लाभ हुआ। गोमूत्र आधारित जैविक कीटनाशक का उपयोग करने से हर छोटी-मोटी बीमारी के लिए बाजार से दवा नहीं खरीदनी पड़ती है।

-सुबोध कुमार मिश्रा
कृषि विशेषज्ञ - 'सेवा भारत'

सेवा अतिथि गृह बना बहनों की जीविका का विकल्प

'सेवा अतिथि' आतिथ्य और पर्यटन के क्षेत्र में महिलाओं द्वारा संचालित उद्यम है। इसका उद्देश्य महिलाओं की आय में बढ़ोतरी लाने के साथ-साथ पर्यटकों को होम-स्टे का सुखद अनुभव कराना व समुदाय आधारित पर्यटन को बढ़ावा देना है। जिसके तहत इसका दायित्व किसी भी होमस्टे की तरह की सेवा प्रदान करना, पर्यटन के लिए निर्देश देना, स्थानीय पारंपरिक भोज़न, हस्तकारीगरी व अन्य जानकारी देना होगा।

सेवा अतिथि गृह यानी होम स्टे की बहनों को कोविड-19 के चलते हुए लॉकडाउन के समय व्यस्त रखने की आवश्यकता थी। इसको ध्यान में रखते हुए हमने बहनों का वॉट्सअप ग्रुप बनाकर बहनों को कोरोना से बचाव की और सरकार द्वारा दी जा रही योजनाओं की जानकारी दी।

कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान बहनों को हमने बेसिक कम्युनिकेशन हेतु आम बोलचाल के हिंदी शब्दों को अंग्रेजी में अनुवाद करके वाट्सअप ग्रुप में भेजकर

कॉन्फ्रेंस कॉल द्वारा समझाया। जैसे ही लॉकडाउन कम होना शुरू हुआ तो 'सेवा' अतिथि की बहनों ने मेहमानों की रुचि हेतु 'वर्क फ्रॉम माउंट' अभियान किया जो फायदेमंद रहा। इसके द्वारा बहनों की आमदनी में बढ़ोतरी हुई।

'सेवा' अतिथि ऑनलाइन के जरिये व सोशल मीडिया व मेहमानों के द्वारा 2020 के अंत तक सकारात्मक पूछताछ जारी रही। वर्तमान में 'सेवा' अतिथि अल्मोड़ा में तीन और रुद्रप्रयाग में पांच बहनों के साथ आठ होमस्टे संचालित किये जा रहे हैं। इन सभी को उत्तराखंड पर्यटन विभाग द्वारा प्रमाणित किया गया है।

हमारे सभी मेहमान अपने फीडबैक में प्रामाणिक पारिवारिक जुड़ाव, यादगार अनुभव और प्रतिक्रिया साझा करते हैं। 'सेवा' अतिथि का सोशल मीडिया फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब चैनल पर सक्रिय है, जिसमें मेहमानों के अनुभव, होमस्टे से जुड़ी बहनों की दिनचर्या व अन्य ग्रामीण कार्य, स्थानीय त्यौहार, समुदाय के उत्सव, पहाड़ों के खूबसूरत नजारे पोस्ट किये जाते हैं।

लक्ष्य बाजार : उन पर्यटकों तक पहुँच बनाना जो बुनियादी स्तर पर ग्रामीण जीवन का अनुभव लेना चाहते हैं और सीमित सुविधाओं के बावजूद वहाँ आराम से रह सकें। 'सेवा' अतिथि गृह विशेष रूप से इसलिए भी आकर्षित करते हैं क्योंकि ये हमारी महिला उद्यमियों द्वारा संचालित किये जाते हैं।

हम क्या प्रस्तुत करते हैं : उत्तराखंड में यात्रियों के लिए, होमस्टे अनूठी ग्रामीण जीवन पद्धति को प्रदर्शित करके ग्रामीण और सांस्कृतिक अनुभव की तलाश करने वाले लोगों के लिए एक आदर्श स्थान बन रहा है। अतिथि से कृषि पर्यटन को भी बढ़ावा मिल रहा है जहाँ पर्यटक कृषि गतिविधियों को सीख सकते हैं। अतिथि निरंतर इस बात पर बल देता है कि पर्यटकों को होमस्टे के दौरान अद्वितीय अनुभव प्राप्त हो सके और उन्हें पहाड़ी जीवन की दैनिक गतिविधि व आजीविका का ज्ञान भी मिल सके।

आगे कूच : अतिथि अभी होमस्टे, आतिथ्य, टूर गाइड आदि से संबंधित लाभार्थियों की क्षमता निर्माण के

लिए प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों को डिजाइन करके प्रदान कर रहा है। स्त्रियों और समुदाय के अन्य सदस्यों को इस व्यवसाय को चलाने से संबंधित ज्ञान प्राप्त होगा जो उन्हें एक ठोस आधार प्रदान करेगा। सेवा अतिथि टाकुला बसौली की भगवती बहन ने अपना अनुभव कुछ यों बताया:

'मैंने अभी तक इस तरह का काम नहीं किया था तो शुरुआत में मुझे थोड़ा डर लग रहा था कि कोई अनजान व्यक्ति हमारे घर में आकर रहेगा तो क्या होगा? कैसे होगा? लेकिन जब मेरे घर में पहले मेहमान आये तो मेरा डर कम हुआ। समय के साथ-साथ मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ा और अब तक मैं चार मेहमानों को होस्ट कर चुकी हूँ। मुझे भरोसा है कि होमस्टे के काम से मुझे मेरी आमदनी को बढ़ाने और अपनी पहचान बनाने में मदद मिलेगी। अभी मैं खेती और पशुपालन का काम करती हूँ लेकिन खेती को जंगली जानवरों से नुकसान हो जाता है जिसके कारण हमारे गाँव के काफी लोग शहरों की तरफ रोज़गार की तलाश में चले जाते हैं।'

कन्दरा रुद्रप्रयाग की शकुन्तलाबहन ने बताया कि,

'मैं खेती और पशुपालन करती हूँ। होमस्टे के काम को आमदनी के एक वैकल्पिक स्रोत के रूप में कर रही हूँ। जैसे अभी खेती को जंगली जानवर नष्ट कर दे रहे हैं ऐसे में अगर हम आमदनी के दूसरे जरिये न ढूँढे तो आने वाले समय में अपना घर चलाना भी हमारे लिए मुश्किल हो जाएगा।

अभी मैंने अपने होमस्टे में तीन मेहमानों को होस्ट किया है। मेहमानों के साथ कैसे बात करना और किस तरह उनके साथ परिवार की तरह व्यवहार करना आदि सब अब समझ में आने लगा है इसलिए मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ रहा है।'

मोहनी बहन सेवा अतिथि टाकुला बसौली ने कहा कि,

'मेरी उम्र 59 वर्ष है, मेरे साथ मेरी बहू और बेटा रहते हैं। मेरी एक पोती और एक पोता है। मैंने अभी तक इस तरह का काम नहीं किया था तो कुछ डर-सा लग रहा था कि कोई अनजान व्यक्ति हमारे घर में आकर रहेगा तो क्या होगा? लेकिन धीरे-धीरे झिझक और डर खत्म हो गया। अब तक मैं पाँच मेहमानों को होस्ट कर चुकी हूँ। इस काम से मेरी आमदनी बढ़ेगी और मेरी अपनी पहचान भी कायम होगी, इस बात का मुझे यकीन है।'

कन्दरा रुद्रप्रयाग की ही बिलोचना बहन का कहना है कि,

'मैं एक गृहणी हूँ। मेरे 2 बेटे और बहुओं के साथ में मैं रहती हूँ। यों तो मैं खेती और पशु पालन करती हूँ लेकिन अतिरिक्त आमदनी के लिए होमस्टे का काम भी कर रही हूँ। अभी तक मैंने अपने होमस्टे में तीन मेहमानों को होस्ट किया है। पहले मुझे समझ में नहीं आता था कि मेहमान से कैसे बात करूँ, कैसे खाना परोसना है लेकिन धीरे-धीरे सब कुछ सीखा। अब सभी से अच्छी तरह से बात करती हूँ ताकि उनको अपने परिवार की तरह महसूस हो। मेरे काम को देखकर मेरी बहुएँ भी होमस्टे के काम को आगे बढ़ाने में मेरी मदद कर रही हैं।'

- दयाबहन
एरिया इंचार्ज व सेवा अतिथि लोकल प्रोग्राम को-ऑर्डिनेटर

केंचुआ खाद से मिला रोज़गार का अतिरिक्त विकल्प

झारखंड राज्य के हजारीबाग जिले में 'सेवा' वर्ष 2016 से खेती करने वाली बहनों के साथ कार्यरत है। 'सेवा' के द्वारा बहनों को समय-समय पर तकनीकी जानकारी दी जाती है जैसे कि, मौसम के अनुसार होने वाली फसलों का प्रशिक्षण, खेती में उपयोग होने वाली गोबर खाद व कीटनाशक दवा की जानकारी देना इत्यादि। हम निरंतर इस दिशा में विचार कर रहे थे कि बहनों की उपज किस प्रकार बढ़ सके। हमने देखा कि खेती में खाद की अहम भूमिका होती है लेकिन हमारी बहनें बाजारों में उपलब्ध महँगी रासायनिक खाद खरीदने में असमर्थ होती हैं। इस वजह से उनका उत्पादन आशा के अनुरूप नहीं हो पाता है। इन बहनों की उपज और जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से 'सेवा' के तहत बहनों को केंचुआ खाद बनाने के प्रति जागरूक करना शुरू किया गया। ये सभी बहनें पशु पालती हैं तो गोबर भी प्रचुर मात्रा में होता है। पहले ये बहनें गोबर को सीधे अपने खेत में फेंक देती थीं इससे गोबर बेकार हो जाता था।

'सेवा' की पहल से बहनों को सर्वप्रथम कृषि विज्ञान केन्द्र में आयोजित केंचुआ खाद की प्रदर्शनी में ले जाया गया ताकि प्रत्येक बहन को केंचुआ खाद की जानकारी अच्छे से मिल सके। इसके साथ ही साथ बहनों को केंचुआ खाद से जुड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारियों से भी अवगत करवाया गया।

इस विजीट के बाद बहनों को आस-पास के गाँव से केंचुआ उपलब्ध कराया गया ताकि केंचुआ का पैसा उस बहन को ही मिले। इस प्रकार 'सेवा' के द्वारा 19 गाँव में 90 बहनों को प्रशिक्षण देने के बाद केंचुआ की खाद बनवाई गई। बहनों ने अपनी खेती में इसी खाद का उपयोग किया जिससे उनकी उपज में बढ़ोतरी हुई। इन बहनों को जो लाभ हुआ उसे देखकर वे बहनें भी खाद बनाना सीखने के लिए उत्सुक होने लगीं जो पहले प्रशिक्षण से वंचित रह गईं थीं। जो बहनें पहले खाद बना चुकी थीं उन्हीं बहनों ने अन्य बहनों को केंचुआ खाद बनाने का प्रशिक्षण दिया।

इस तरह ये सभी बहनें केंचुआ खाद बनाने लगीं। पहले रासायनिक खाद खरीदकर अपने खेतों में डालती थीं जो महँगी भी होती थी और जमीन को नुकसान भी पहुँचाती थी लेकिन अब खुद ही खाद बना लेने के कारण उनका

वह खर्च बचने लगा और उपज भी ज्यादा होने लगी।

इसके अलावा, इन्हीं बहनों में कुछ बहनों का मास्टर ट्रेनर के रूप में चयन किया गया ताकि गाँव की अन्य सभी बहनों को जागरूक करके रासायनिक खाद पर होने वाले खर्च पर रोक लगाकर पैसा बचाया जा सके। हमारा ध्येय है कि, बहनों की उपज बढ़े, खेत की मिट्टी की गुणवत्ता भी सही-सलामत रहे और बहनों के परिवार का स्वास्थ्य भी बेहतर हो।

फूल कुमारीबहन के गाँव का नाम पेसरा टोला है, जो चुरचू से लगभग 8 किलोमीटर की दूरी पर है। फूल कुमारीबहन ने 'सेवा' की ओर से होने वाले प्रशिक्षण में भाग लिया और काफी अच्छी तरह से सब कुछ सीखकर स्वयं ही इसे तैयार करने का निर्णय लिया। वे कहती हैं कि,

'अब से पहले हमें कभी भी इतने सस्ते और सरल तरीके से निर्मित होने वाले जैविक खाद की जानकारी नहीं मिली। हमारे घर में काफी जानवर हैं, उनका गोबर हम लोग सीधे ही खेत में डाल देते हैं। यह गोबर सूख जाता है और बारिश में बह भी जाता है लेकिन इस गोबर का उपयोग करके केंचुआ खाद बनाने की विधि हमने सीखी जो हमारी फसलों पर बहुत कारगर है। इसके साथ ही हमारा जो पैसा रासायनिक खाद में खर्च होता था वह भी बचेगा।'

केंचुआ खाद बनाने की विधि:

सामग्री -गोबर, सूखे पत्ते, पानी, केंचुआ, पारदर्शी प्लास्टिक, सड़ा पुवाल (धान की वेस्ट)। विधि-सबसे पहले 10 फीट लंबा एवं 3 फीट चौड़ा गड्डा तैयार करना है। इसके बाद गड्डे में प्लास्टिक को बिछा देंगे फिर गोबर का घोल बनाकर उसमें लेप लगायेंगे। फिर उसके ऊपर 6 इंच तक सूखे पत्ते डालेंगे। उसके बाद, उसमें सूखा गोबर डालेंगे ओर साथ में थोड़ा पानी भी देंगे। फिर उसमें केंचुआ डालकर उस वर्ग में फैला देंगे। अंत में उसे जूट के बोरे से ढँक देंगे। इसमें दो दिन के अंतराल से 2 बाल्टी पानी देंगे।

दो से ढाई महीने में खाद तैयार हो जाएगी फिर दूसरे भाग में नया गोबर डालना शुरू करेंगे। तैयार खाद को बोरों में भरकर छाया में रखेंगे। केंचुआ खाद के लिए स्थान का चुनाव -1. स्थान ऊँचा होना चाहिए ताकि बरसात का पानी उसमें जमा न हो सके। 2. पेड़ के नीचे हो तो बेहतर है ताकि केंचुआ धूप से मरे नहीं। 3. घर के नजदीक हो ताकि इसका निरीक्षण किया जा सके। 4. नजदीक में पानी की सुविधा हो ताकि गर्मी के मौसम में उसमें पानी का छिड़काव आसानी से किया जा सके। 5. मुर्गी-बतख से बचाकर रखें।

सुनिताबहन कायरा टोला की रहने वाली हैं। वे खेती बाड़ी करने के साथ-साथ मजदूरी करने हजारीबाग जाती हैं। उन्होंने बताया कि, 'हम लोग अपनी उपज को बढ़ाने के लिये रासायनिक खाद का उपयोग करते हैं जो बहुत महंगा होता है और हम ये भी जानते हैं कि इसे भारी मात्रा में डालना हमारे खेतों के लिये नुकसानदायक है। फिर भी हम लोग इसे खेतों में डालते हैं। लेकिन आज केंचुआ खाद बनाने का जो प्रशिक्षण मिला वो हमारे लिये बहुत फायदेमंद है। 'सेवा' की बहन का धन्यवाद जिन्होंने हमें जैविक खाद बनाने की इतनी उपयोगी जानकारी दी। मैं रासायनिक खाद खरीदने में असमर्थ थी लेकिन इस प्रशिक्षण के बाद अब मैं अपने खेतों में जैविक खाद का ही प्रयोग करूँगी। इससे मेरी बचत भी होगी और उपज भी बढ़ेगी।

ललीताबेन गाँव रोहनिया की रहने वाली हैं। इन्होंने 9.2.2021 को 'सेवा' की ओर से आयोजित कम्पोस्ट निर्माण प्रशिक्षण में भाग लिया। अब वे भी केंचुआ खाद बनाकर अपने खेतों में उसका उपयोग करेंगी जिससे उनके खेत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति कायम रहे और उपज भी बढ़े।

-उदय नारायण,
फील्ड मोबीलाइजर

सरकारी योजना का लाभ दिलवाया

कोविड-19 महामारी के कारण लगातार बढ़ते हुए लॉकडाउन से सभी वेंडर्स की आजीविका पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। काम बंद था और जो थोड़ा-बहुत पैसा था वह भी खर्च हो गया इसलिए इन लोगों को अपना काम शुरू करने के लिए कार्यशील पूंजी (वर्किंग कैपिटल) की जरुरत थी जिसको पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पी.एम. स्वनिधि) ऋण योजना की शुरुआत हुई ताकि सभी वेंडर्स दोबारा से काम शुरू कर आत्मनिर्भर हो सकें।

इस योजना के अमल में आते ही 'सेवा' दिल्ली यूनियन ने अपने सभी क्षेत्रों में प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना अभियान की शुरुआत की ताकि हमारी सदस्य बहनों और उनके परिवारों को इसका लाभ मिल सके। इस काम की शुरूआत रघुवीर नगर एवं सुंदर नगरी क्षेत्र से हुई क्योंकि यहाँ बहुत अधिक संख्या में वेंडर्स रहते हैं।

शुरुआती दौर में हमें बहुत-सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ा क्योंकि लोग इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे क्योंकि लोन का इस्तेमाल तो तब ही होगा जब दिल्ली में बाज़ार लगना शुरू हों। बाज़ार नहीं लगने के कारण लोग लोन लेने से कतरा रहे थे।

सितम्बर 2020 में जब इसकी शुरुआत हुई तब तक केवल साप्ताहिक बाज़ारों को ही शाम 4 से 7 बजे तक लगने

की अनुमति थी। उसमें भी आधे वेंडर्स ही बाज़ार लगा सकते थे।

सदस्यों को 'सेवा' कार्यकर्ताओं ने बहुत समझाया उसके बाद धीरे-धीरे मेंबर्स ने लोन फॉर्म भरवाना शुरू किया। शुरूआती दौर में ऑनलाइन फॉर्म भरवाने के तरीकों में भी बहुत से बदलाव किये गये। कई बार फीडबैक के बाद लोगों का फॉर्म भरने में आसानी होने लगी।

अभी तक 'सेवा' दिल्ली ने लगभग 3000 सदस्यों के फॉर्म भरवा दिए हैं जिनमें से लगभग 400 लोगों को लोन मिल चुका है।

-सुभद्रा बहन,
कार्यकर्ता

मालिक : ''अनसूया ट्रस्ट'' की ओर से प्रकाशक-मुद्रक : प्रीति शान्त, म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन, पी.एण्ड टी. चौराहा, शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.)-462003. फोन : 0755-2790039
मुद्रण : प्रियंका ऑफसेट, प्रेस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल. फोन : 2555789

अनसूया

अनसूया कार्यालय :

द्वारा- म.प्र.हिन्दी साहित्य सम्मेलन,
मायाराम सुरजन स्मृति भवन,पी.एण्ड टी.चौराहा,
शास्त्रीनगर, भोपाल (म.प्र.) 462003 फोन नं. : 2790039

ई-मेल - ansuya_trust@rediffmail.com,
Facebook - ansuya_trust@rediffmail.com